विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४९, श्रावण पूर्णिमा, १९ अगस्त, २००५ वर्ष ३५ अंक २

धम्मवाणी

आरद्धवीरिये पहितत्ते, निच्चं दळ्हपरक्कमे।
समग्गे सावके पस्स, एतं बुद्धानवन्दनं॥
महापजापतिगोतमीथेरीअपदानं - २/७-१७१

– देख! यह जो श्रावक साधक नित्य सम्मिलित रूप से दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ पराक्रम करते हुए, अहंशून्य होकर साधना करते हैं, यही वंदना है सभी बुद्धों की।

ग्लोबल पगोडा

स्व० गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की जन्म शताब्दी के अवसर पर स्थापित **"ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन"** ने म्यंमा के विश्वविख्यात **"श्वेडगोन पगोडा"** की भांति भारतवर्ष में भी एक स्मारक बनाने की योजना बनायी और सम्प्रति मुंबई में "एस्सेल वर्ल्ड" परिसर के समीप इस विशाल पगोडा का निर्माण किया जा रहा है। इसकी ऊंचाई ३१५ फुट होगी और अंदर का व्यास २८० फुट होगा। कुलमिला कर इसका कॉर्पेट एरिया ६७,५०० वर्गफुट होगा। परिक्रमा पथ ७० फुट चौड़ा होगा, जिस पर किसी भी समय ८-१० हजार पर्यटक चल सकेंगे। शताब्दियों तक अक्षुण्ण बने रहने के लिये इसका निर्माण **केवल पत्थरों से** ही किया जा रहा है। इसकी बनावट का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग यह है कि यह विश्वविख्यात बीजापुर के गुम्बज (डोम) से दुगुना होगा।

यह विशाल स्तूप भारत की उस प्राचीन गौरव-गरिमा का जाज्वल्यमान 'प्रकाश-स्तंभ' साबित होगा, जिसे भगवान बुद्ध ने २६०० वर्ष पूर्व मानवजाति को ऐसी कल्याणीशिक्षा देकर उपकृत किया था, जिसके अभ्यास से व्यक्ति जीवन-मरण के सभी दुःखों से सर्वथा मुक्त हो जाता है। यह स्तूप भारत की उस पुरातन, सनातन सार्वजनीन धर्म-परंपरा को लोक कल्याण के लिए पुनः उजागर करेगा। यह स्वर्णिम स्तूप उस स्वर्णिम युग का पुनरावर्तन करेगा जबकि भारत अध्यात्म विद्या के साथ-साथ लौकिक शिक्षाओं और भौतिक ऐश्वर्य में भी सारे संसार का सिरमौर था। यह गगनचुंबी स्तूप अपना ऊंचा सिर उठा कर भारत के ही नहीं, विश्व के तमाम लोगों का आह्वान करेगा और तथागत तथा उनकी सर्वहितकारिणीशिक्षा को बुलंदी के साथ मुखरित करेगा।

यह स्मारक म्यंमा के श्वेडगोन पगोडा जैसा ही होगा और शताब्दियों तक कायम रहेगा। यहां पर लगभग **आठ हजार साधक** एक साथ ध्यान कर सकेंगे। यहां एक धर्म-म्युजियम होगा, जहां पर प्रदर्शनी, पुस्तकालय तथा शोधकेंद्र होगा। इसमें ऐसे अनेक प्रभाग होंगे, जिनमें आधुनिक तकनीक द्वारा **दर्शन-श्रव्य** सुविधा से लाखों लोगों को बुद्ध के जीवनकाल की घटनाओं एवं उनकी वास्तविक शिक्षा की जानकारी प्राप्त होगी।

इसकी सहायता से भगवान बुद्ध के बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर होंगी। श्रोताओं और दर्शकों को इस तथ्य की जानकारी मिलेगी कि शाक्यमुनि गौतम बुद्ध न कोई देव थे, न किसी देव के अवतार अथवा प्रतिनिधि। वे किसी दैवी कृपा से बुद्ध नहीं बने थे। अनेक जन्मों के कठोर परिश्रम द्वारा भव-पार उतारने वाली सद्गुणों की पुण्य पारमिताओं को परिपूर्ण करके इस अंतिम जीवन में उन्होंने सम्यक संबोधि प्राप्त की थी और इसीलिए **संबुद्ध** यानी 'स्वयं बुद्ध' कहलाये। वे पौराणिक नहीं, बल्कि पूर्णतया ऐतिहासिक मानव थे। एक मानव द्वारा उपलब्ध की जा सकने वाली सर्वोच्च अवस्था प्राप्त कर लेने के कारण वे महामानव कहलाये, महापुरुष कहलाये। असीम करुणा से सराबोर होकर दुखियारी मानवता को दुःख-विमुक्ति के लिए कल्याणी विपश्यना विद्या जीवन भर बांटते रहे, इसीलिए महाकारुणिक कहलाये। राग, द्वेष और मोह को पूर्णतया भग्न कर लेने के कारण भगवान कहलाये। कर्म और तदनुकूल कर्म-विपाक के नैसर्गिक नियमों का स्वयं प्रत्यक्षीकरण करके उसके अस्तित्व को स्वीकार करने और उसी का प्रचार-प्रसार करने के कारण परम आस्तिक कहलाये। उन दिनों के भारत में आस्तिकता की यही परिभाषा सर्वस्वीकृत थी।

ऐतिहासिक महामानव बुद्ध का सत्य स्वरूप प्रकाशित होगा तो भारत में बुद्ध के प्रति फैली हुई भ्रांतियों का निराकरण होगा और अंधविश्वासजन्य दैवी चमत्कारों के स्थान पर मानवी पराक्रम और पुरुषार्थ की गौरवमयी महत्ता स्थापित होगी।

सामान्यतः ऐसे स्तूप ठोस होते हैं। परंतु आधुनिकतम वास्तु शिल्पकला की तकनीक द्वारा इसे भीतर से ठोस न रख कर, उसमें एक विशाल साधना कक्ष बनाया जायगा, जिसके बीचोबीच ये पावन धातु रखी जायेंगी ताकि इनके इर्द-गिर्द हजारों साधक-साधिकाएं एक साथ बैठ कर सामूहिक साधना कर सकेंगे और इन पावन धातुओं की धर्म-तरंगों से लाभान्वित हो सकेंगे। राजनगरी मुंबई में आज भी हजारों विपश्यी साधक हैं। यह संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है और भविष्य में भी बढ़ती ही रहेगी। अतः उनकी सामूहिक साधना के लिए यह विशाल विपश्यना कक्ष अत्यंत प्रेरणादायक तथा उपयोगी सिद्ध होगा। स्पष्ट है कि इस विशाल भव्य स्तूप से राजनगरी मुंबई की शोभा बढ़ेगी और घनी आबादी वाली मुंबई राजनगरी से इस धर्मस्तूप की उपादेयता बढ़ेगी।

जुलाई, २००५ तक पगोडा के निर्माणकार्य की प्रगति

विशाल पगोडा की नींव डालने से लेकर चरणवद्ध तरीके से काम पूरा करने के सभी प्रयत्न इसी दृष्टि से किये जा रहे हैं कि मई-जून २००६ तक पगोडा का गुम्बद बनाने का काम पूरा हो जाय। गुम्बद को पूरा करनेमें पत्थरों की ९४ परतें जोड़नी हैं, जिनमें से ४३ परतों तक का काम पूरा हो चुका है। जैसे-जैसे ऊंचाई बढ़ती जायगी, हर परत में पत्थरों की संख्या कम होती जायगी। गुम्बद की शीर्ष ऊंचाई लगभग १०० फुट होगी।

इस लक्ष्य को प्राप्त करनेके लिए तीन टावर क्रेन्स, दो मोबाइल क्रेन्स, दो हायड्रोलिक मशीनें, एक ट्रैक्टर, और लगभग ३०० मजदूर लगातार काम कर रहे हैं।

निर्माण-स्थल से लगभग १०००-१२०० कि.मी. दूर जोधपुर (राजस्थान) से आवश्यक पत्थर लाये जा रहे हैं। इन्हें तराशकर उपयोग में लाये जाने योग्य बनाने में कुछ महीनों का समय लगेगा।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ७५ लाख से १०० लाख रुपये (२,२०,००० अमेरिकी डालर) **प्रति माह** की आवश्यकता है।

पगोडा के अतिरिक्त प्रदर्शनी-दीर्घा को पूरा करने का आर.सी.सी. का काम भी प्रगति पर है।

इसके साथ-साथ वायु-संचार, ध्वनि-प्रसारण एवं दर्शन-श्रव्य यंत्रों के लिए दक्ष परामर्शदाता अपना-अपना काम कर रहे हैं और आशा की जाती है कि मुख्य गुम्बद का काम पूरा होने तक ये कार्य भी पूरे हो जायेंगे।

विगत १२ जून २००५ को पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के सान्निध्य में पगोडा परिसर में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें १८०० साधकोंने भाग लिया। पूज्य गोयन्काजी के साथ न्यासियों की एक बैठक हुई, जिसमें यहां पर १०० से १५० साधकों के लिए एक **'विपश्यना केंद्र'** के निर्माण का प्रस्ताव किया गया।

दान संबंधी विवरण

दान-दाताओं की सुविधा के लिए अब **ऑन लाइन दान** <**www.globalpagoda.org**> पर भी स्वीकार किया जाता है।

ग्लोबल पगोडा के बारे जागरूकता फैलाने में सहायता करके भी आप धर्मसेवा कर सकते हैं।

ग्लोबल पगोडा का संदेश फैलाने के लिए इसके परिसर में एक विस्तृत कार्यक्रम योजना उपलब्ध है। इसे प्राप्त करने तथा अधिक जानकारी के लिए कृपया ईमेल- <admin@globalpagoda.org> पर संपर्क करें।

आप अपने चेक या ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। भारत में आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत आयकर की छूट मिलेगी। विदेश के दानदाता अपने-अपने देशों में आयकर की छूट के बारे में कोषाध्यक्ष से ईमेल – <kamlesh@khimjikunverji.com> से स्पष्टीकरण ले सकते हैं।

ग्लोबल पगोडा के चित्ताकर्षक परिदृश्य को प्रकट करता हुआ "माडल" (पीछे समुद्र की खाड़ी और मुंबई का दृश्य भी दृष्टगोचर है)

गुम्बद की ऊपर उठती दीवार का भीतरी भाग और निर्माण के समय उसे सपोर्ट करती स्कैफोल्डिंग (छायाचित्र जून, २००५)

उत्तरी पगोडा (दाहिनी ओर ऊपर) के साथ पूरे परिसर का ऊपर से लिया हुआ छायाचित्र, जिसमें कार्यकर्ताओं के निवासादि भी दृष्टगोचर हैं।

[प्रत्येक पत्थर (स्टोन) पर लागत-विवरण –

सेरेशन स्टोन्स –रु. ५०००/-, डोम स्टोन्स –रु. ३५००/-, कालमस्टोन्स –रु. १०००/-, सपोर्ट स्टोन्स –रु. १००/-]

यदि आप ग्लोबल पगोडा के लिए दान देना चाहते हैं तो – कोषाध्यक्ष, **'ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन',** द्वारा –खीमजी कुंवरजी एण्ड कंपनी, ५२, बाम्बे म्युचुअल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड, मुंबई–४००००१ के पते से भेज सकतेहैं।

संपर्कः फोन –९१-२२-२२६६ २५५६.

इमेल- <kamlesh@khimjikunverji.com>

(**सूचना –** कृपया नकद रुपये न भेज कर, चेक या ड्राफ्ट ही भेजें, जिसका भुगतान मुंबई में हो सके ।)

GlobalPagodaWebsite:http://www.globalpagoda.org

Contains comprehensive and updated information about the Global Pagoda with facility for online donation for this historic project.

नये उत्तरदायित्व

भिक्षुणी आचार्या

Bhikkhuni Yin Kit Sik (Sister Jessie), *Canada*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. श्री गुलाबराव एवं श्रीमती मंगला माली, बीड

3. Ms. Joelle Caschera, *France*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्रीमती सोनल आधिया, नई मुंबई

२. सुश्री पारुल गडा, मुंबई

३. सुश्री जयबाला संघवी, मुंबई

४. डॉ. (श्रीमती) प्रीति बाक्रे, गोवा

५. श्री सुधाकर बाविस्कर, भोपाल

६. श्री लालेंद्र हूमने, भोपाल

मंगल मृत्यु

सहायक आचार्या श्रीमती पार्वती रणछोड़ ने १६ जुलाई को शांतिपूर्वक देह त्याग किया। उन्होंने अनुकरणीय जीवन जीते हुए जो धर्मसेवा की, उसके पुण्य से उन्हें शांति और सद्गति प्राप्त हो!

दोहे धर्म के

धन्य! ध्यान की गिरि गुहा, धन्य! ध्यान का स्तूप।
यहां शांति सब को मिले, भिक्खू हो या भूप॥

साधक शांत कुटीर में, धर्म विपश्यी होय।
जागे प्रीति प्रमोद सुख, अमृत-दर्शी होय॥

अपने अपने पुण्य का, ऐसा सुखद सुयोग।
तपोभूमि पर आ जुटे, देश देश के लोग॥

धर्मदेश से धर्म की, गंग प्रवाहित होय।
सकल विश्व के लोग सब, मंगललाभी होंय॥

जन जन के कल्याण हित, स्तूप स्थापना होय।
जागे विश्व विपश्यना, जन मन मंगल होय॥

प्रज्ञा शील समाधि से, करें बुद्ध सम्मान।
यही बुद्ध की वंदना, करें विपश्यना ध्यान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सासन मँह जागै धरम, उखड़ै भ्रस्टाचार।
धनियां मँह जागै धरम, सुद्ध हुवै व्यापार॥

जात वरण रो गोत रो, जठै भेद ना होय।
जन जन रो मंगल करै, सुद्ध धरम है सोय॥

जागै विमल विपस्सना, सुखी हुवै सब लोग।
दूर हुवै दारिद्र दुख, दूर हुवै भव रोग॥

हुवै स्तूप री स्थापना, जगै धरम रो ग्यान।
विपस्सना री साधना, करै अमित कल्याण॥

संप्रदाय री स्थापना, अनरथकारी होय।
करै धरम री स्थापना, महापुरुस है सोय॥

विपस्सना स्यूं बुद्ध री, सही वंदना होय।
अपणो भी होवै भलो, जन जन रो हित होय॥

एक साधक

की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४९, श्रावण पूर्णिमा, १९ अगस्त, २००५**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-,विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-," US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2003-05

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक ,महाराष्ट्र, भारत
फोनः (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्सः (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)